

(2)

गीताज्ञा
॥१॥

पुण्यकेले ॥ १० ॥ होकांजयाधियाप्रीती ॥ हाअमर्तबालाव्यक्ती ॥ मजयेकर्वकीचीयास्थिती ॥
 आवडतसे ॥ ११ ॥ येरुवींहाशोगियांनाडळे ॥ वेदाय्यांमिनाकळे ॥ येथेंध्यानाचेहीडोळे ॥ पाव
 तिना ॥ १२ ॥ तेहानिजस्वरूप ॥ जेअनादिनिर्घुण ॥ परिकवणोमानेंसरूप ॥ जालेंअसे ॥ १२
 हात्रेलेक्यपटाचीघडी ॥ आकाराचीपेलशडी ॥ परिकेसाययाचाआवडी ॥ अवतरलाअसे ॥ १४ ॥
 श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इमंविस्वतेयोगंप्रोक्तवानहमव्ययं ॥ विस्वान्मनवेप्राहमनु
 रिश्चाकवेब्रवीत् ॥ १ ॥ टीका ॥ मगदेवहृणोगापांडुसुता ॥ हाधियोगआम्हीविस्वता ॥ कधि
 लापरितेवात्ता ॥ बहुतांदिवसांची ॥ १५ ॥ मगतेणोविस्वतेरवी ॥ हेयोगस्थितीआधवी ॥ नि
 रूपिलीवरवी ॥ मनुप्रती ॥ १६ ॥ मनुआपणोअनुधिल ॥ मगइश्चाकाउपदेशिली ॥ ऐसीपर
 पनारिस्तानली ॥ आद्यहेगा ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ एवंपरंपराप्राप्तमिमंराजर्षयोविदुःसकाळे
 नेहमहतायोगोनष्टःपरंतप ॥ २ ॥ टीका ॥ मगआणिकहीययायोगाते ॥ राजर्षीजाले
 जाणतो ॥ परितेथोनिआतांसांप्रते ॥ नेगिजेकोणही ॥ १८ ॥ जेंयवीप्राणियीकामीकर ॥ देहा

अध्या०
॥४॥

१४ ॥

॥१॥

॥१॥

चिवरी आदना बहत कनू निविसना ॥ आत्महितचा ॥ १९ ॥ वेष्टलेना थिलया आस्था बु
 द्धी ॥ विषयसुखाची परमावधी ॥ जीवुपेसी उपाधी ॥ आवडे लोकी ॥ २० ॥ येरुवीं तरि स्व
 व णायंचा गावं ॥ पाटा उवेंकाय कनावं ॥ सांघें जाय धारवी ॥ काज आंथी ॥ २१ ॥ कांबधि
 मानिये आस्थानी ॥ ककणी गीता तें हे नमनी ॥ कांको ह्या चंदनी ॥ आवडी उपजे ॥ २२ ॥
 किंचद्रोदया आरते ॥ जयाचे डोळे फुटते ॥ तेका उळेके विचंद्राते ॥ वेळ खती ॥ २३ ॥ तैसी
 वैराग्याची सिवंन देखती ॥ जे विवेकाची सासने पाती ॥ ते मूरवके विपावती ॥ मज देखना
 तीं ॥ २४ ॥ कैसाने णोमे होवा टिनला ॥ तेणे बहत येकाळ गेला ॥ म्हणो नियोग हा लोपला ॥
 लोकीं याये ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ स एवायं मया तद्योगः प्रोक्तः पुरातनः ॥ सक्तो सिमसखा
 चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमं ॥ ३ ॥ टिका ॥ तो निव्या जिहा आता ॥ तुज प्रति कुंती सुता ॥ सांधी
 तला आम्ही तला ॥ श्रुति नकरी ॥ २६ ॥ हे जिविचें गा गुज ॥ परि नहाइ जे चित्तुज ॥ जें प
 ठियें सी मज ॥ म्हणो निया ॥ २७ ॥ तुं प्रमाचा पतला ॥ सक्तिचा जिहाळा ॥ मैत्रियेची कळा ॥

(५)

॥ गीताज्ञा ॥
॥ २॥

धनुर्देवा ॥ २७ ॥ सुं अनुसंगत्वा जवो ॥ आतं तु जकाय वं चं जवो ॥ जही यिया ली ग्रामा
 क्लृष्टा हो ॥ जालमा ह्यो ॥ २९ ॥ तहं नाये क्त्वा हावे ॥ गाज बज्य हि न धरावी ॥ परि दु में
 अतान हनाव ॥ हा गले प्राधी ॥ ३० ॥ श्रुत्वा ॥ अर्जुन उवाच ॥ अपरं सवतो जन्म परं
 जन्म विवस्वतः ॥ कथमेत द्विजानी यां त्वा दो प्रो क्तवानिति ॥ ४ ॥ टिका ॥ तव अर्जु
 न ह्यणे हरी ॥ माय का क्त्वा से हकर ॥ ये ये वसे का य अद धारं ॥ ह्रुपा निधी ॥ ३१ ॥
 तुं सं सार श्री ती ची सा उज्जी ॥ अनाथा ची न उज्जी ॥ आ हातें का र प्रस र्वा ॥ ३२ ॥
 देवा पां शु ल ये म दा वि ये तां न जे नि जो जा न वा हे ॥ हे बा ल वि का य ॥ तु ज
 ॥ ३३ ॥ अ वा पु ये न मी जे का ता त थे त मी दे व द यी ॥ ने दि वि दे हे को पा र्शे न का
 ॥ ३४ ॥ श्रु त्वा ये का ॥ ३५ ॥ त रि सा गी ल हा मो ॥ न्नां स धी त ली त्ना अर्जु न वे नो दे व का
 ॥ ३६ ॥ य दि मा त् ॥ ३७ ॥ वि व र ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 उ वं ना ही ॥ त रि तु या व त ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥

॥ अद्य ॥
॥ ४ ॥

॥ ६६ ॥

॥ २ ॥

२

च॥ आषिं जुंत दं दं सापेना ॥ भूगो विगा यिगे यो जे च ॥ विसं वा ह ॥ ७ ॥ ते विचि
 देव चरित्र तये ॥ अयण का हो चिने पिजे ॥ देव के विमहा पिजे ॥ ये कि हे जे ॥ ७ ॥
 तार हे वि मात अघ वी ॥ भी प्र वि से त सी ॥ अ कालु वा त यार वी ॥ उपदेश के ल
 श्री सा गवानु वा ॥ बहु नि मे व्य ती ता नि ज न्ना नि त व च्चा जु न ॥ तान्ये ह वे द सर्वा णि
 न त्व वे ल्य परंत प ॥ ५ ॥ टिका ॥ त वं क र्ण र्ण य ॥ इ सु ता ॥ तौ वि व स च त जै हो ता ॥ तें आ म्ही
 न सां ऐ सी चि ता ॥ १ ॥ तं त रित्त ॥ ४ ॥ तं हे ग र्णु ने ण सी ॥ पै ज न्मं आ मुं तु ह मी ॥
 बहु ते गे लं परि न स रे सी ॥ आ पु लं तु ॥ म जे गे जे गे अ व स रे ॥ जे जं हं उ नि अ
 रं ते ॥ ते स म स्त दि ही स्मे र ॥ ध न्नु ॥ ४ ॥ अ ठो क ॥ अ जो पि स न्न व्य या त्मा म्हा ता
 ना मी श्व रो पि स न्न ॥ प्र द्म ति स्वाम ॥ अ षा य सं ष वा म्या त्म मा य या ॥ ६ ॥ टिका ॥ ५ ॥
 भू गो नि हे अ घ वे ॥ मा गे ल म ज अ ष वे ॥ न अ ज हि सी सं ष वे ॥ प्र द्म ति यो गे ॥ ४ ॥
 शं से अ ज त्व त रि न ना शे ॥ परि हा णे जं जे य क दि से ॥ तं जं त वि वि मा या व शं ॥ मा सा

(6)

॥ ३ ॥

चिगयीं ॥ ४४ ॥ माझी स्वतंत्रता तरि नमोडे ॥ परिकर्माधीन ऐसा आवडे ॥ तें हिं श्रीं लिबु
 द्वितरि घडे ॥ ये हवीं नाहीं ॥ ४५ ॥ जें येक विदिसे दुसरें ॥ तें दर्पणाचे नि आधावे ॥ ये ह
 वीं काय वस्तु विचारे ॥ दुजे आहे ॥ ४६ ॥ ते सा अमूर्त विमो किरीटी ॥ ते प्रकृतितें जें
 अधिष्ठं ॥ तें साकारपणें नटे नटे ॥ कार्यालागि ॥ ४७ ॥ **श्लोक ॥ यदा यदा हि धर्मस्य**
ग्लानिर्भवति भारत ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं ॥ ७ ॥ टिका
 जे हे धर्म जात आघवे ॥ फणी फणी म्याचि रक्षावे ॥ ऐसा बोध हा स्वभावे ॥ आद्य असे ॥ ४८ ॥
 म्हणोनि अजब परते वेवं ॥ मी अव्यक्तपण दिनावदी ॥ जे केळीं धर्माते अपिसवी ॥
 अधर्म हा ॥ ४९ ॥ ते केळीं आपु लियेचे नि केवारे ॥ मी साकार होउनि अवतरे ॥ मग अ
 ज्ञानाचे आंधारे ॥ गिळुनि घालें ॥ ५० ॥ **श्लोक ॥ परित्राणां यसा धर्मां विनाशाय च**
दुष्प्रतां ॥ धर्मसंस्थापनाय संप्रवामि कुरु कुरु ॥ ८ ॥ टिका मग अधर्माची
 आवधीतोडें ॥ दोषांची लिही फाडें ॥ सज्जनाकरवी गुढी ॥ उभवीं सुरवाची ॥ ५१ ॥

॥ अध्या ० ॥ ४ ॥

॥ ६७ ॥

॥ ७ ॥

(7)

दैत्यांची कुच्छेनाशीं साधूचामान गिवंसीं धर्माआणि नितीसी शोभैसेरी ॥ ५२ ॥
 अविवेकाची काजळी फेडुनि विवेकदाप उजळीं ते योगियां पाहे दिवाळीं निरंतर ॥ ५३ ॥
 स्वसुरेवं विश्वकोदे धर्मचजरींनां दे भक्तांनिघतीदोदें साखिकाचीं ॥ ५४ ॥ तें पायां
 चाखडळफिटे पुण्याची पाहाट फुटे जे मर्तिनाश प्रकटे पांडुकुमरा ॥ ५५ ॥ यथा
 एसियांकाजाळागीं अवत रिजेगायत्रीकरीं धरिहे विवोळनेवें जो जगीं तो विवे
 किया ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ जन्मकर्मचमे दिव्यमेव यत्न तितत्त्वतः ॥ त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्मने
 तिमामेति सोर्जुन ॥ १ ॥ टिका ॥ माझे अजब विजन्मणें ॥ अक्रियत्वे विकरणें ॥ हे पें
 अविकार जो जाणो तो मुक्तमानीं ॥ ५७ ॥ तो चालविल्या रंगें चले देहीचा देहाना
 कळे तोयंच त्रिंतरि मिळे ॥ माझा चिरुपें ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ वीतराग मय क्रोधा मन्म
 यामामुपाश्रिताः ॥ बहवो ज्ञानतपसा पूता भद्रावमागताः ॥ १५ ॥ टिका ॥
 ये रुवी पनापरन शोचिती ॥ जे कामना शून्यहेती ॥ वाटाके वळनवचती ॥ क्रोधाचिया ॥ ५९ ॥



॥ गीताज्ञा०
॥ ४ ॥

जेसदा मिर्यां चिंत्तां शिजे ॥ मासियाने वा जियजे ॥ कां आत्म बोधें तोषले ॥
जे ॥ ६० ॥ जेतपोनेडा चिंत्ताशी ॥ किंये काय न ज्ञानासी ॥ जेपरित्रता तीर्थ
रूप ॥ ६१ ॥ तेमदावासहजे आले ॥ मींते धित होउनि वेले ॥ जेमजतया उरले ॥
सांधे पितळेची गंधकाळिका ॥ जे फिटली होय निंशेषा ॥ तें सुवर्णकाय आ
डुंजायिजे ॥ ६२ ॥ तेसेयम नियम कडसले ॥ जेतपो ज्ञानी चोरवाळले ॥ तेमीं
येथें संशय नाही ॥ ६४ ॥ **उक्ता येथयासां प्रपद्येते तांस्तथैव ज्ञानम्यहं ॥ मम**
वर्त्तमानुवर्त्तते मनुष्याः पार्थ सर्वत्र ॥ ११ ॥ टिका ॥ येरुवीतहं पाहं ॥ जेजेने
माझा वायं ॥ सजति तरंगं मिहं ॥ तेसा चिंतजे ॥ ६५ ॥ देखें मनुष्य जातसकळ ॥ हेम
जावता चिंतजनशीळ ॥ जालें असे केवळ ॥ माझा वायं ॥ ६६ ॥ उक्ता कांहीतः
कर्मणां सिद्धिं यजति इह देवताः ॥ सिप्रिंहमानुषाकसिद्धिं न वीतिकाजा ॥ १२ ॥ टिका
परिज्ञाने वीणानाशले ॥ जे बुद्धि फेदासि हे आले ॥ तेणें येकें चिया कल्पिलें ॥ अनेक ॥ ६७ ॥

॥ अध्या०
॥ ४ ॥
६३ ॥

॥ ६८ ॥

॥ ४ ॥

(9)

मृणोनिअसेदीसेददेरवती॥ याअनामानामर्गेवित्ती॥ देवदेवीमृणता॥ अचर्चाते॥ ६८॥
जेसर्वत्रसदासमातेथेविभागाअधमोत्तम॥ मतिवशेविभ्रमविचिती॥ ६९॥ मगनानाहेतु
प्रकारे॥ यथोचितेउपचारे॥ मानतादेवतांतरे॥ उपाशित्ती॥ ७०॥ तेथेजेजेकाहीअपेक्षित॥
तेतेसेचियावत॥ परितेकर्मफलनिश्चित॥ वळरवतु॥ ७१॥ वांच्छनिदेतेघेतेआणिक॥ हेक्री
तिनाहंसम्यक॥ येथेकर्मचिफलसूचक॥ मनुष्यलोकां॥ ७२॥ जेसेक्षेत्रीबीजजेपेरिजे॥
तेवांच्छनिआनननिफजे॥ कांपाहिजेतेविदेखिते॥ दर्पणाधारे॥ ७३॥ नातरिकडयातअवटी॥
जेसाआपुलाचिबोलकिरीटी॥ पुडसादाहोउनिउडी॥ निमित्तयोगे॥ ७४॥ तेसासमस्ताइ
यांफलना॥ मीसासिस्तपेअर्जुना॥ येथेप्रतिफलभावना॥ आपुलाडि॥ ७५॥ श्लोक॥
चातुर्वर्णमयासृष्टेगुणकर्मविभागाः॥ तस्यकर्तारमपिसाविध्यकर्तारमव्ययं॥ १३॥ टिका॥
आतीयियाचिपरीजाणा॥ व्याहीहेवर्ण॥ स्वजिहमेयागुणा॥ कर्मभागे॥ ७६॥ हेमजचिस्तव
लले॥ परिम्यांनाहीकेडे॥ ऐसेसाचजेणेजाणीतले॥ तेमुटलाजांगे॥ ७७॥ श्लोक॥ नमी

१०
गीता०
॥५॥

कर्माणि लिपंति न मे कर्मफलेन सह ॥ इति मां योऽभिजानाति कर्मसिर्न सबध्यते ॥ १५ ॥
जं प्रह्लाते चोत्तरं ॥ गणेशे च ॥ कर्मैतद्दनुःसरेण विवंचितं ॥ १६ ॥ यथैक
विः हेमन्तशाखां ॥ गिरिचाले ॥ गुणकर्तकडसणी ॥ केलीसहजो ॥ १७ ॥
मृणोः ॥ ऐकं ॥ हेवर्णकेदसंस्तु ॥ कर्तानके सर्वया ॥ आधिहेतु ॥ १८ ॥ श्लोक ॥
एवं ज्ञात्वा ह्यतः कर्म पूर्वैर्नपि मुमुक्षुभिः ॥ कुरु कर्मैव तस्मात्पूर्वैः पूर्वतरं ह्यती ॥ १५ ॥ टिका ॥
मानी जे लुमुह्य होतो ॥ ति ॥ ते विज्ञापोनि ॥ कर्मैकिलं सा ज्ञेतां ॥ धनुद ॥ १ ॥
परितिये जिजे जैसी दादुल ॥ तु ॥ तेसी कर्मैत या जालं ॥ मे ॥ सह तु ॥ २ ॥
येथं आदि कहि ॥ जुना ॥ कर्माकर्त ॥ वना ॥ अत ॥ उरे बाडे सजाना ॥ योग्यन ॥ ॥ ॥
श्लोक ॥ किं कर्म किमकर्मेति कवसाप्यत्र मोहिताः ॥ तत्तक ॥ प्रवक्ष्यामियज्ञात्वा मो
क्षसमुपमात् ॥ १६ ॥ टिका ॥ तर्हिणि जेतें कवजा ॥ अथवा अकर्म काय लक्षणा ॥ ऐसं विचा
रितां दिच ॥ गुणो निवले ॥ १४ ॥ जैसं कुडं कानापो ॥ रस रसने निवा ॥ दि वण ॥ डोळ

अध्या०
॥४॥

॥५॥

॥५॥

(11)

यांचे हिंदे रवणां संशयो घाली ॥ ८५ ॥ तेने निष्कर्मते ये निष्कर्मो गिरं सिद्धत अ
 हातिकर्मी जे दुर्जा मष्टी मनोधर्मी कान्त हस्त ॥ ८६ ॥ यांचे निगूरुची गोठी कायसी
 यथे सोहिले क्रीत दर्शी म्हुजेते ते आतां परिगेंसी सांगेन तुज ॥ ८७ ॥ उक्ता
 कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ॥ अकर्मणश्च बाद्धव्यं गहना कर्म
 णो गतिः ॥ १७ ॥ टिका ॥ तस्मिन् सर्वे कर्मभूते जे स्वसाधे ॥ जेणे हा विश्वाकार संभवे
 तं सावे व आधी जात ॥ वे ॥ लगे ये ॥ ८८ ॥ मंगल वंश श्रम उचित ॥ अं कर्म विशेष
 हित ते हिंदो व सावे निश्चित ॥ उये मनी ॥ ८९ ॥ पाठी निषिद्ध जे म्हुणिपे ॥ ते हिं बु
 झा रें स्वस्ते ॥ ये तुले निये शं नृगुणे ॥ अपसया ॥ ९० ॥ ये हवी जग हे कर्मा धान ॥
 ८५ ॥ ॥ हि याची गहन ॥ परिते असा उक्त ॥ सासाचे जे ॥ ९१ ॥ श्लोक ॥ कर्मण्य
 कर्मयः पश्यदकर्मणि च कर्मयः ॥ सबुद्धिमान्मनुष्येषु सकतः स्वस्वकर्म
 हृत ॥ १८ ॥ टिका ॥ जो सकळ कर्मी वृत्तते ॥ देते अमुक न कर्म्यता ॥ कर्म तीरी

(12)

॥ गीताज्ञान ॥
॥ ६॥

निराशता फळा चिया ॥ ९२ ॥ आणि कर्तव्यतया लागी जया दुसरे नाहीं जरी ॥
ऐसी नैष्कर्म्यता तरि चांगी ॥ बोधला असे ॥ ९३ ॥ परि क्रिया कळा पड्यवा ॥ आचर
तु दिसे औधेवी बर वा ॥ तरि तो धिही विनि जाणावा ॥ ज्ञानियांगा ॥ ९४ ॥ जैसा जो
जळा पासो उभावेला ॥ तो जरि आपणार्थे जळा माजि देखिला ॥ निघांत वळखा
वला ॥ म्हणो मी वेगळा आहे ॥ ९५ ॥ अथवा नवे हानरिगे तो थडिये चेरु रवजाती दिखे
वेगो ॥ ते धिसाचो कोने पाहुळो ॥ तव नरव म्हणो अचळ ॥ ९६ ॥ तैसें सकळ कर्म ॥ अ
सणो ॥ ते पुढे मानुनी यां वायाणो ॥ मग आपणार्थे जो जाणो ॥ नैष्कर्म्य ऐसा ॥ ९७ ॥ आणि
उदो अस्तचे न घमणो ॥ जैसे न चालतां स्तया चालणो ॥ तैसें नैष्कर्म्य विजाणां
कर्म ॥ चि अस्तो ॥ ९८ ॥ तो मनुष्यासा विरवां तरि आवडो ॥ परि मनुष्यत्वतया न घडे ॥
जैसें जळा धारे न बुडे ॥ भानु बिंब ॥ ९९ ॥ तेणें न पाहाती विश्वदेखिली ॥ न करितां सर्व
केळीं ॥ न सोगितां सोगिलीं ॥ भोग्य जांत ॥ १०० ॥ येकिये विनायी बेसला ॥ परि सर्वत्र तो

॥ अध्या ० ॥
॥ ४॥

॥ ६० ॥

॥ ६ ॥

॥ गीताज्ञा०
॥ ७ ॥

सांडुनि आशा कुर वंडी ॥ अहंभावची ॥ ७ ॥ म्हणोनि अवसर जे जे पावे ॥ किंते पों
चित्तो सुखावे ॥ ज्या आपुले आणि परावे ॥ दोन्ही नाहं ॥ ८ ॥ तो दिवी जे जे पाहे ॥ हे
आपण चिहो उनि जाये ॥ आरि केते ते आहे ॥ तो रिजाळ ॥ ९ ॥ चरणी हान चाले
कां मुरवे जे जे बोले ॥ ऐसे चेशा जत त तुले ॥ आपण चितो ॥ १० ॥ हे असो विधि
पाहं ॥ ज्यासि आपण पेवाच ॥ नवाह ॥ तथे कर्म ते कवणा कायी ॥ बाधित याते ॥ ११ ॥
श्लोक ॥ यदृच्छालास संतुष्टेर्द्विदातो तौ ॥ १२ ॥ समः सिद्धावसिद्धौ च ह्य
त्वापि न निबध्यते ॥ १३ ॥ टिका ॥ आदिहा मनस जेशे ॥ उपजे ते तुले नुरे चि जया
दुजे ॥ तो निर्मसर काय म्हणिजे ॥ बोले वेहं ॥ १२ ॥ म्हणोनि सर्वा परिजे मुक्त
तो सकळ कर्म विकर्म रहित ॥ सगुण परिगुणातीत ॥ यथे प्रीति नाहं ॥ १३ ॥ टिका ॥
गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानापि उत चेतसः ॥ यथाया चरतः करसमप्रविष्टी
यते ॥ १३ ॥ टिका ॥ तो देह संगें तरि जसे ॥ परिचेतन्या सारिखा दिसे ॥ पाहाती परब्रह्मा

॥ अध्या०
॥ ४ ॥

॥ ६९ ॥

चेनिकसो चोरवाळजो ॥११४॥ एसाहीपरिकवतिको ॥ जरिकर्म करीयज्ञादिकें ॥ रितियें
 लयाजातीअशेषें ॥ तथाचावायें ॥११५॥ अवकाविचींअपत्रेंजेसं ॥ जुमीविणव्याका
 शी ॥ हारपतीअपेसं ॥ उदैलीसातें ॥११६॥ तेसंविधिविधानेंविहितें ॥ जहंआचरला
 तोसमस्तें ॥ तहोतियेंएक्यभावेइत्येतो ॥ पावतील ॥११७॥ **ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हवि**
र्ब्रह्माग्ने ब्रह्मणा हुतं ॥ ब्रह्मेव तेन गतव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना ॥२४॥ टिका ॥ जें हें ह
वनसीहोमीहोमिता ॥ कांडं द्रिये यज्ञहासात् ॥ एसीबुद्धीसिनाहोमिन्नता ॥ म्हणोनिधो ॥२५॥
जेयथायज्ञयजावे ॥ आणितें हविमंजादिआधवो ॥ तोदेवतअसेअविनाशसावे ॥ आ
त्मबुद्धी ॥११९॥ म्हणोनिब्रह्मतेचिकर्म ॥ एसेबोधाआलें जयासमा ॥ तथाकर्तव्यतेचिनेष्क
मी ॥ धनुर्द्धरा ॥१२०॥ जेआतांअविवेककुमारत्वामुकलो ॥ जयीविरक्तीचेंपाणिग्रहण
जालें ॥ मगउयासन जिहिंसाधिलें ॥ योगाग्निचें ॥२१॥ **उक्त ॥ देवमेवापरे यज्ञं या**
गिनः पर्युपासते ॥ ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजु कृति ॥२५॥ टिका ॥ जेयजन

॥ गीताज्ञा ॥
॥ ८ ॥

अहनिशी जिही अविद्या हविजी मने सी सुतवा क्य हुता शो ॥ हवन के ॥
 तिही यो न बीकी ॥ जेथे अहनिशी हविजी ॥ जेथे अहनिशी कामिजे ॥ पांडुकु ॥ २३ ॥
 देवास्तव देवनें पालना ॥ २४ ॥ जेथे अहनिशी ॥ जेथे अहनिशी नादेह सरणा ॥ तो जाण योगी ॥ २५ ॥
 आतां अवधारी सांघेन आठिका ॥ जेथे अहनिशी ॥ तेय जे चियत देव ॥ उपासि
 ती ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ आत्रादी निंद्रिया प्यने संयमाग्निषु जु कृति ॥ शब्दीदी निवषया
 यन्य इंद्रियाग्निषु जु कृति ॥ २६ ॥ एक ॥ एक संयमाग्नि हेत्री ॥ फक्त त्रयी चान ॥
 यज्ञतक रता एति श्री ॥ इंद्रियद्रव्यी ॥ २७ ॥ येन येन अग्रदी वितळले ॥ तवं संयमाचे विहार
 कले ॥ तथे अ पाचत जाले ॥ इंद्रियां नव्वा ॥ २८ ॥ निहो विवक्तनी उवाळा घेतली ॥ हे व
 विकारचिं इंद्रनें प उ प लं ॥ तथे आशा धमे र ॥ २९ ॥ पांचें हुंटे ॥ २८ ॥ आशाक्य वि
 धा चिया निर वडी ॥ विषया हती उदंड ॥ हवन केले हुंटे ॥ इंद्रियाग्निचे ॥ २९ ॥ श्लोक ॥
 सर्वाणी इंद्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ॥ आत्मसंयमयोगात्मा जु कृती ज्ञान

॥ अध्या ०
॥ ४ ॥

॥ १२ ॥

॥ ८ ॥

दीपिते ॥३७॥ टिका ॥ येकी विथापरी यार्थी ॥ दोषक्षपिले गासुर्वथा ॥ ३७ ॥ कीहद
 धारणी मंथा ॥ विवेकके उ ॥ १३५ ॥ तां उ पशमी निहटिळा धैर्य भावेदाटिळा गुनवा
 क्येकाटिळा ॥ बळकटपणें ॥ ३१ ॥ ऐसेंसमरसेमंथनकेले तवंडकरी काजाआले ॥
 जे उज्जीवनजालें ॥ ज्ञानाग्निचें ॥ ३२ ॥ पहिलारिधिसिद्धिचासंभ्रम तोनिवर्तोनि
 गेलाधूम ॥ मगप्रकटलासूक्ष्म ॥ विस्फुलिंग ॥ ३३ ॥ तयामनाचेंमोकजें ॥ तेंचिपेटवणा
 घातले ॥ जेयमनियमं हळुवानले ॥ आयितेहोते ॥ ३४ ॥ तेथेंसाडुकणेंज्वाळासमृद्धा ॥
 मगवासनातरुचियासमिधा ॥ स्त्रेहेसिनानाविधिया ॥ जाळिलिया ॥ ३५ ॥ तेथेंसोईम
 त्रेदीक्षितें ॥ इंद्रियकर्माचियाआहुत ॥ तियेज्ञानानळीप्रदीप्त ॥ दिधलीया ॥ ३६ ॥
 पाठीप्राणक्रियेचेनिस्त्रुवेवसं ॥ फुणाहुतीपडिलीहुताशी ॥ तेथेंअवकथनसमरसं ॥
 सहजजालें ॥ ३७ ॥ मगआत्मबोधाचेंसुरव ॥ तेजेसंयमाग्निचेंशेष ॥ तोपु डाशदेख
 ॥ तळातिहें ॥ ३८ ॥ येकडेसाडेसायजनी ॥ मुक्तजलिगात्रिभुवनी ॥ ययायजनक्रिया

॥ गीताज्ञा ॥
॥ ११ ॥



पां६

॥ ६३ ॥

तरिष्यन्तानां परिश्रमिन्ते ये कश्चिच्छोकमद्रव्ययज्ञास्तथो यज्ञायोगयज्ञास्तथा परे ॥
 स्वध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संश्रितव्रताः ॥ २८ ॥ टिका ॥ ये कश्चिद्रव्ययज्ञमहणिपती ॥ ये कश्चि
 पनामग्यानि फलजती ॥ ये कश्चि योगयज्ञास्तथा परे ॥ १४० ॥ ये कश्चि शब्दी शब्दविय
 जिते ॥ तो वाक्ययज्ञमहणिजे ॥ ज्ञाने ज्ञाने गोपनीयज्ञ ॥ ४१ ॥ हे अर्जुना सकलैकवर्षां
 जे अनुष्ठितां च तिसांकडे ॥ परिश्रिते ॥ यज्ञास्तथा परे ॥ ४१ ॥ तेषां विषये ये सके
 व्यापियोगसमृद्धिवांशिते ॥ महानिष्ठापणो भावके ॥ अहमहमे ॥ ४१ ॥ श्लोक ॥ अ
 पाने जुहति प्राणं प्राणे प्राणितथा परे ॥ प्राणायामगती न ध्या प्राणायाम परायण ॥ २९ ॥
 मग अपानानि चामुखी ॥ प्राणद्रव्ये देव ॥ हवनकले वैकं ॥ अप्यासयो ॥ ४४ ॥ ये कश्चि अपान
 प्राणी अर्पिते ॥ ये कश्चि हे ही ते ॥ निवेदयती ॥ तेषां प्राणायामो महणिपती ॥ पांडुकुमरा ॥ ४१ ॥ श्लोक
 अपरे नियताहाराः प्राणान् प्राणेषु जुह्वती ॥ सर्वप्येतेषां विद्वान् ज्ञानदापेत्कश्चि ॥ ३० ॥
 ये कश्चि योगक्रमे ॥ प्रत्याहार तं गमे ॥ प्राणायाम संस्रते ॥ हवनकले वैकं ॥ ४४ ॥ ये कश्चि अपानाय सकल ॥

॥ अध्या ॥
॥ ४ ॥

(19)

ॐ३

समस्तहेयजनशील॥ जिहिंयज्ञद्वये मनोमळ॥ क्षाळनकेले ॥ १४७ ॥ श्लोक॥ यज्ञशिष्टा
 मृतपुजायांतिब्रह्मसनातनं॥ नायंश्लोकोस्त्ययज्ञस्यकुर्वन्नुत्तममृतिका॥
 तेथेअविद्याजातजाळिती॥ जेउरेनिजसखावता॥ जेथेअग्निप्राणिहोता॥ उरेचिना॥ ४८॥
 येथेयजितयाचाकामपुरा॥ यज्ञिबेहद्वनसेरा॥ माघोतेजेथोनिबोसेरा॥ क्रियाजात॥ ४९॥ विचार
 जेथेनरीघो॥ हेतुजयातेनेघो॥ जेद्वैतदोषसंगी॥ मैलेचिना॥ १५०॥ ऐसेअनादिसिद्धचोरबटा॥ जे
 ज्ञानयज्ञेअवशिष्टातेतेसेचितीब्रह्मनिष्ठ॥ ब्रह्महमंत्रे॥ ५१॥ ऐसेयज्ञशिष्टामृतधाले॥ ५२॥
 मृतसावासिधाले॥ म्हणोनितेब्रह्मजाले॥ अनायासे॥ ५२॥ येरांविस्तारीमाळनघरीचि॥
 जयांसंयमाग्निसेवानघडेची॥ जेयोगपारनकारितीची॥ ५३॥ जन्मलेसांते॥ ५३॥ तयांअहिकचि
 धडाहं॥ मगपरत्रिकसांघिजेलकायी॥ म्हणोनिअसोहेगोविपाहं॥ पांडुकुमरा॥ ५४॥ श्लोक॥
 एवंबहविधायज्ञावितवाब्रह्मणोमुखा॥ कर्मजानूविद्वितावसर्वा॥ नैवज्ञात्वाविमोक्षसं॥ ५५॥ टिका॥
 ऐसेबहुतीपरीअनेगा॥ जेतुजसांघितलेयागा॥ तेविस्तारुनिबेदंदिचांग॥ म्हणितलेआंथी॥ ५५॥

॥ गीताज्ञा ॥
॥ १० ॥

परितेणों विलोरे काय करावें ॥ हे किं कर्म सिद्ध जाणावे ॥ ये तुलेने कर्म बंध स्वप्नावें ॥ पोवे लना ॥
 अथान्द्रव्य मयाद्यज्ञाज्ञानयज्ञः परैतप ॥ सर्वकर्मस्त्रिंशत्पाथेज्ञानेपरिसमाप्यते ॥ ३३ ॥
 अर्जुना वेदजयाचे मूळा जे क्रिया विशेषेन शुद्ध ॥ जिये नकाळिचे फळ ॥ स्वर्गसुरवा ॥ ५७ ॥
 तेद्रव्यादियाणकारहेती ॥ परिज्ञानयज्ञाचे सैदिनेपवती ॥ जेसी ताराते जसेपती ॥ दिनकरापा
 सा ॥ ५८ ॥ देवें परमात्मसुरभिधानो ॥ साधवदायोगीजन ॥ जेन विसंभती अंजन ॥ उन्नेष
 नेत्रो ॥ ५९ ॥ जेधां वतया कर्मोची लणी ॥ जेनिष्कर्म बोधाची रवाणी ॥ जेसुके लिबायापोजन
 धणी साधनाची ॥ ६० ॥ जेथे प्रवृत्तिपांगुळ जाडी ॥ तकाची दिवी गेडी ॥ तेणे इंद्रियें विसर
 डें ॥ विषयसंगा ॥ ६१ ॥ मनाचे मनपणालें ॥ जेथे नेत्रोळीचे बोळणे वळे ॥ जयामाजिसांपडले
 दिसे जेय ॥ ६२ ॥ जेथे वैराग्याचा पांगुफिटो ॥ विवेकाचाही सोसतुटो ॥ जेथे नपाहातां सहज
 सेंटे ॥ आपणापें ॥ ६३ ॥ भुक्तताहें प्रणिपातनपरिधननकावया ॥ उद्योगाततेज्ञा
 नंज्ञानिनस्तत्वदर्शिनिः ॥ ३४ ॥ टिका ॥ तंज्ञानपेंगावनवें ॥ मनी आंधीजाणावे ॥ तरिसीतां

॥ अध्या ॥
॥ ४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ १० ॥

गीताज्ञा०
॥११॥

जो अमृताचा कडवसा ॥ तो जया विया प्रकाशा ॥ पुरे चिना ॥ ७३ ॥ तथा कायसे हे मनो मळ ॥ हे
 बोळतां विषय कि डाळ ॥ नाही येणें पाडे दिसाळ ॥ दुजे जगें ॥ ७४ ॥ जो क ॥ यथे धांसि स
 मिदो ग्निर्भस्मसाकुन तेर्जुन ॥ ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि सस्मसाकुते तथा ॥ ३७ ॥
 सांघें सुवन त्रयाची काजळी ॥ जे गगनामा जि उधवळी ॥ ते प्रळया धिये वा हां टुळी ॥ काय अत्र
 (पुरे) ॥ ७५ ॥ किं पवनचे निकोपें ॥ याणिये चिजे पाडे ॥ तो प्रळयानळ काय दडुपो ॥ तपोनसि
 ७६ ॥ म्हणोनि असो हे न घडे ॥ जे विचारितं विषय घडे ॥ पुढती ज्ञानाचे नि पाडे ॥ न दिसे प
 वित्र ॥ ७७ ॥ यथे ज्ञान ही उत्तम होये ॥ आणि का हें ये कते से विषा हे ॥ तरि सांघें चैतन्य कां नो
 हे ॥ दुसरे गा ॥ ७८ ॥ स्यामहाते ज्ञाचे नि प्रकाश ॥ जरि चोरवाळले प्रति बिंब दिसे ॥ कां गव
 सिधियांगवसे ॥ आकाश हे ॥ ७९ ॥ ना तरि पृथ्वीचे नि पाडे ॥ कांटाळें जरि जोडे ॥ तरि उप
 मा ज्ञानां घडे ॥ पांडुकुमरा ॥ १८० ॥ जो क ॥ न हि ज्ञानेन तदुशयं व्रमहा वयत ॥ य
 स्वयं योगसं सिद्धः काळेनात्मनि विंदति ॥ ३८ ॥ टिका ॥ म्हणोनि बहुतां परी पाहातां

॥११॥

॥६५॥

॥११॥

पुडतिपुडती नि द्वीरितां॥ ज्ञानाची पवित्रता॥ ज्ञानी धिष्ठांधी॥ १८१॥ ज्ञेसी अमृताची
 चवी निवाडजे॥ तरि अमृतासारिखा म्हणिले॥ तसे ज्ञान हे उपमिले॥ ज्ञाने सांख्य ८२
 आतां यथावरिजे बोलणे॥ ते बाया निवेळु फेडणे॥ तव साचे हे पाथ म्हणे॥ बोलिजे तसे ८३॥
 परिज्ञान ऐसे ते के विजाणावे॥ ऐसे अज्ञान जवळु सावे॥ तव ते मनोगत जाणा॥ तले देवां॥
 आपण निरूपिती॥ ८४॥ मग अनंत म्हणे॥ करीती॥ आता धित देयी ये गोबी॥ सांधे न ज्ञानाधि
 ये फेटी॥ उपावो तुज ८५॥ **उक्ते**॥ **अहं बान्धुपते ज्ञान तत्परः संयते द्वियः॥ ज्ञानं तु**
ध्यापरांशांतिमधिरेणाधिगच्छति ॥ ३९॥ टीका॥ तरि आत्मसुखा चिया गोडिया॥
 कां विटल जिन कळ विषयां॥ जयाचा तारी इंद्रियां॥ मानु नाहीं॥ ८६॥ जो मना सिंचाड
 नसंगो॥ जो ये प्रकृतिचे केलें नेंध॥ जो अद्वैचे निरसंगो॥ सुखिया जो ला॥ ८७॥ तयाते गि
 विंसित॥ हे ज्ञान पावे निश्चित॥ जया मा॥ जि अचुं धित॥ शांति आहे॥ ८८॥ ते ज्ञान हृदयी प्र
 तिष्ठे॥ आणि शांतिचा अंकुश फुटे॥ मग विचार बहु प्रकट॥ तत्क्षणं॥ ८९॥ मग जे उती

॥गीता०
॥१२॥

वासपहिजाते उतीशांतीची देखिजे। तथेपारावर नेणीज निर्धोरिता ॥१०॥ हेसाहा
 उत्तमोत्तर ज्ञानबीजाचा विस्तार सांगतां प्रसेनयान परिशंखातां ॥११॥ श्लोक ॥ अ
 तश्चा श्रद्धधान श्रुसंशयात्मा विनश्यति ॥ नार्युकोक्तिनपमानसुखं संशया
 मनः ॥४०॥ टीका ॥ ऐकंजया प्राणया चावायं। यया ज्ञानाचि आवडी नाहीं। तयाचं
 पियाउं म्हणे कायी वरिणपत्तन ॥ १० ॥ सन्यजे मंगरुह ॥ कांचैतन्ये विषादेह तैसें
 त्रितिसमोहा ॥ ११ ॥ अथवा ॥ ११ ॥ अथवा ॥ ११ ॥ अथवा ॥ ११ ॥ अथवा ॥ ११ ॥ अथवा ॥ ११ ॥
 अहंवाहा तरितेथे ॥ १२ ॥ अथवा ॥ १२ ॥ अथवा ॥ १२ ॥ अथवा ॥ १२ ॥ अथवा ॥ १२ ॥ अथवा ॥ १२ ॥
 कारसा ॥ १३ ॥ अथवा ॥ १३ ॥ अथवा ॥ १३ ॥ अथवा ॥ १३ ॥ अथवा ॥ १३ ॥ अथवा ॥ १३ ॥ अथवा ॥ १३ ॥
 अथमत्तही ॥ १४ ॥ अथवा ॥ १४ ॥ अथवा ॥ १४ ॥ अथवा ॥ १४ ॥ अथवा ॥ १४ ॥ अथवा ॥ १४ ॥ अथवा ॥ १४ ॥
 जजेयेवं ॥ १५ ॥ अथवा ॥ १५ ॥ अथवा ॥ १५ ॥ अथवा ॥ १५ ॥ अथवा ॥ १५ ॥ अथवा ॥ १५ ॥ अथवा ॥ १५ ॥
 येथे ॥ १६ ॥ अथवा ॥ १६ ॥ अथवा ॥ १६ ॥ अथवा ॥ १६ ॥ अथवा ॥ १६ ॥ अथवा ॥ १६ ॥ अथवा ॥ १६ ॥

॥अध्या०
॥४॥

॥६६॥

अहिकापरिमुंकला ॥ सर्वसुखासिगा ॥ १९८ ॥ जयाकाळज्वरआंगीबाणो ॥ तोशीतो
 छजेसानेणो ॥ आगिआणिचोदणो ॥ सरिसेंचिमानो ॥ १९९ ॥ तेसैंसाचआणिलटिकें ॥
 विरुद्धअथवा ॥ निकें ॥ संशयीतेनोळरेवे ॥ हिताहित ॥ २०० ॥ येणेंकायेंतुसंयज्जावा
 हारात्रिदिवसपाहो ॥ जैसाजायंधाठोडवानाहो ॥ तेसैंसंशयअसतांकाहो ॥ मनानये ॥ १ ॥
 म्हणोनि संशयाहनिनिपटारे ॥ आणिकपापबाहोघोरें ॥ हाविनाशाचियेआणीवागुरे ॥
 आणियांसो ॥ २ ॥ येणेंकायेंतुसंयज्जावा ॥ हाचियेकजिणावा ॥ जोज्ञानाचियाअसावा ॥
 माजिअसे ॥ ३ ॥ जेंअज्ञानचेंगाडुदण्डो ॥ तेंहामनीबहुबसवाढो ॥ म्हणोनि सर्वथा मारी
 मोडो ॥ विश्वासचा ॥ ४ ॥ हृदयींहाचिनस्माये ॥ आणिवुड्डीतेंगिवंननिगये ॥ तेथेंसंश
 याप्रकहोये लोकत्रय ॥ ५ ॥ लोक ॥ योगसन्यस्तकर्माणांज्ञानसांछेन्नसंशयं ॥
 आत्मवर्तनकर्माणिनिबध्नांतिधनंजय ॥ ४९ ॥ टिका ॥ ऐसाहीजहंशोनावे ॥ तहंउया
 गंकेडाआंगवे ॥ जरिहातीं होयबनवे ॥ ज्ञानरवडू ॥ ६ ॥ तदितेणेंज्ञानशस्त्रंतिबवटे ॥

(26)

॥गीताज्ञा०
॥१३॥

तं ह त्स्वज्ञानासिनात्मनः ॥ द्विवेन संशयं यो रामातिथो निष्ठुपावत ॥ ४२ ॥ टीका ॥ ४५ ॥
 दयकारणे पर्या ॥ उठं वेगां ॥ संशयासी ॥
 ज्ञाचा बाय ॥ जो ह्म छु ज्ञानदीपाते ॥ एकनाया ॥ ९ ॥ तव यथा धुवा
 परबोलाचा ॥ विना क्त्वि कु म्पं दु ॥ ज्ञान अवसरिचा ॥ दिति रोयिल ॥
 ११ ॥ तेकरेची संगती ॥ क्वाची ॥ ज्जती ॥ म्हणिले ॥ पुढें ॥ २१ ॥
 चाकर वेपणी ॥ की जे आवां ॥ सज्जना के नामनी ॥ विसां वाज ॥
 १२ ॥ जे शांत चि अ सिन बला ॥ म्हा देवा ॥ ले म्पु हु निग्वा ॥ उ ॥ अथ
 तारित ॥ १३ ॥ जैसें बंब तरित ॥ च ति ॥ पवित्र का ॥ लो म्पु भो कडे ॥ गळ चि ॥
 वासितेणे पाडे ॥ अ ॥ जाति कर्म ॥ न या ॥ वा दे ॥ फले का ॥ म्पु न
 जेसा ॥ वा उ ॥ लेसा ॥ लो ॥ धन ॥ १५ ॥ ह्म सो का ॥ म्हा ॥ व ॥

अध्या०
॥४॥

॥६७॥

॥१३॥

(2)

जाणती स्वभावे। तरि निके चित्त्वावे। हेरि नती माझी ॥ २१ ॥ जे म्हा हिस्व आणि शांति
 हिरे स्वाणित्ते सी बोलती। जे सी लावण्य गुण कवती। आणि पति प्रता ॥ १७ ॥ अर्थात्
 साखर आवडे। आणि बोष धांडारि ने चि जोडे। तरि कनिमे बावी कोडे। नावांनावी ॥ १८ ॥
 सहजे मळया निळमंदा। तथा ही धमता चा। सुखाद सुगंध। आणित्ते थें चि जोडे नाद
 देवगत्या ॥ १९ ॥ तरि स्पशं सर्वो गनि वरी। त्साके म्हा जित्ते ते नाचवी। तो व चिकाना करवी
 णावी। बापुमाक्षा ॥ २० ॥ ते से रिये कथें आरि। ते थें श्रवणासि होय पारणे। आणि
 संसार दुःखा बोळवणे। विद्वति विणा ॥ २१ ॥ जित्ते ते निवेदी मरे। तरि वायां चिकां धां धां वेक
 टारे। रोग जाय दुधें साखरे। तरि निवें फा पियादा ॥ २२ ॥ ते सामना चामा रुन करिती। इंद्रि
 यां दुःखनें दितां। ये थें मोक्ष आहें कतां। श्रवणा माजि ॥ २३ ॥ म्हणो निष्ठां थि ठिया अना
 णुका। गीता थें हानिका। ज्ञान देव म्हणे। नायिका ॥ निवृत्ति चा ॥ २४ ॥ हरिः ॐ तस्मिं दिति
 श्रीमद्गवद्गीता रूप निष्कृतु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञान

(28)

॥गीताज्ञा॥
॥१४॥

देवदत्ताप्राकृतटिकायांब्रह्मार्पणयोगोनामचतुर्थोऽध्यायः॥श्लोकसंख्या॥
॥४३॥बोया॥३३४॥

॥अध्या०
॥४॥



॥६८॥

॥१४॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com